जुलाई: 2026 वर्ष : 9 अंक : 10

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

मृदा से नदी तक: सतत कृषि और अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी की नई दिशा

मृदा और जल केवल प्राकृतिक संसाधन नहीं, बल्कि हमारी खाद्य सुरक्षा, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, जैव विविधता और सभ्यता के आधार हैं। जून 2026 के दौरान संस्थान द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रमों ने इस गहरे संबंध को प्रभावी ढंग से रेखांकित किया है। खेत बचाओ अभियान के अंतर्गत पश्चिम बंगाल, बिहार और झारखंड के विभिन्न क्षेत्रों में किसानों को मृदा स्वास्थ्य, संतुलित उर्वरक उपयोग, प्राकृतिक कृषि, हरित खाद, जैव उर्वरक तथा समेकित पोषक तत्व प्रबंधन के प्रति जागरूक किया गया।

आज अनियंत्रित रासायनिक उर्वरकों और कृषि रसायनों का प्रयोग की समस्या केवल खेतों तक सीमित नहीं है। खेतों से बहकर पोषक तत्व जब तालाबों, आर्द्रभूमियों और नदियों में पहुँचते हैं, तो यूट्रोफिकेशन, शैवाल प्रस्फुटन, ऑक्सीजन की कमी और जलीय जैव विविधता में गिरावट जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। अतः स्वस्थ मृदा और स्वस्थ जल निकायों को अलग-अलग विषय मानना वैज्ञानिक दृष्टि से उचित नहीं होगा। ढैंचा (एक दलहन), कम्पोस्ट, जैव उर्वरक, वर्मी कम्पोस्ट और प्राकृतिक कृषि जैसी पद्धतियाँ इस दिशा में व्यवहारिक विकल्प प्रस्तुत करती हैं।

इसी प्रकार गंगा और अलकनंदा नदियों में रोहू, कतला, मृगल, कलबासु तथा महाशीर के रैंचिंग कार्यक्रम और फरक्का में हिल्सा संरक्षण पहल यह दर्शाती हैं कि वैज्ञानिक मत्स्य प्रबंधन नदी पारितंत्र के पुनरुत्थान के साथ-साथ मछुआरा समुदायों की आजीविका को भी मजबूत कर सकता है। चामता आर्द्रभूमि में देशी कैटफिश के वैज्ञानिक संवर्धन, सामुदायिक भागीदारी और जैव विविधता संरक्षण का प्रेरक उदाहरण है।

इन पहलों से स्पष्ट है कि भविष्य की कृषि और अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी का भावी मार्ग अलग-अलग नहीं, बल्कि मृदा–जल–फसल–मछली–पालन के समन्वित प्रबंधन से होकर गुजरता है। विज्ञान तभी सार्थक है जब वह खेत, जलाशय और नदी तक पहुँचकर स्थानीय समुदायों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाए। संस्थान की ये पहल इसी विज्ञान-आधारित, पर्यावरण-सम्मत और समुदाय-केंद्रित विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं।

(निदेशक)

भा कृ अनु परि-सिफरी का उत्तर 24 परगना में सतत कृषि को बढ़ावा देने और जलीय पारिस्थितिक तंत्र की रक्षा के लिए 'खेत बचाओ अभियान' का नेतृत्व

मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, प्राकृतिक खेत, एकीकृत कृषि प्रणाली तथा संतुलित उर्वरक उपयोग के विषयों को सुदृढ़ करते हुए, भा कृ अनु परि-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 01 जून, 2026 को बनगांव स्थित चामता फिशर्स कोऑपरेटिव सोसाइटी में 'खेत बचाओ अभियान' के अंतर्गत एक कृषक दिवस का आयोजन किया। कार्यक्रम में 40 से अधिक किसानों, मछुआरों एवं अन्य हितधारकों ने भाग लिया। कार्यक्रम के माध्यम से मृदा स्वास्थ्य, संतुलित उर्वरक उपयोग, पर्यावरण-अनुकूल कृषि तथा सतत आजीविका के लिए कृषि एवं जलीय पारिस्थितिक तंत्र के बीच

महत्वपूर्ण अंतर्संबंध के प्रति जागरूकता बढ़ाई गई।

प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए डॉ. रंजन कुमार मन्ना, प्रभागाध्यक्ष, सिफरीने दीर्घकालिक खाद्य सुरक्षा और पर्यावरणीय लचीलेपन को सुनिश्चित करने के लिए जैविक एवं सतत कृषि पद्धतियों के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि स्वस्थ मृदा उत्पादक एवं सतत कृषि की आधारशिला है तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए मृदा उर्वरता के संरक्षण हेतु सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं।

इस अवसर पर डॉ. प्रदीप डे, निदेशक, सिफरीने कहा, "'खेत बचाओ अभियान' केवल एक अभियान नहीं है, बल्कि यह एक राष्ट्रीय आह्वान है, जो मृदा स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा, ग्रामीण समृद्धि और पारिस्थितिकीय स्थिरता के बीच अटूट संबंध को रेखांकित करता है। संतुलित उर्वरक उपयोग, मृदा परीक्षण, मृदा स्वास्थ्य कार्ड, प्राकृतिक खेती, जल संरक्षण तथा वैज्ञानिक पोषक तत्व प्रबंधन को एक साथ कार्य करते हुए मृदा की जीवन शक्ति को पुनर्जीवित करना और कृषि उत्पादकता को बनाए रखना होगा। मृदा केवल दोहन करने योग्य संसाधन नहीं, बल्कि संरक्षित की जाने वाली एक जीवंत विरासत है।"

सिफरीके वैज्ञानिकों एवं वैज्ञानिक कर्मियों ने रासायनिक उर्वरकों एवं कृषि-रसायनों के अत्यधिक और अनियंत्रित उपयोग से उत्पन्न पर्यावरणीय जोखिमों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि कृषि क्षेत्रों से पोषक तत्वों का बहाव निकटवर्ती तालाबों, आर्द्रभूमियों, नहरों और अन्य जल निकायों को प्रदूषित करता है, जिससे यूट्रोफिकेशन, हानिकारक शैवाल प्रस्फुटन, ऑक्सीजन की कमी तथा मछली आबादी और जलीय जैव विविधता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

कार्यक्रम का उद्देश्य हरी खाद को मृदा उत्पादकता सुधारने की सतत रणनीति के रूप में बढ़ावा देना था। प्रतिभागियों को ढैंचा (Sesbania aculeata / Sesbania bispinosa) के बारे में जानकारी दी गई। यह तेजी से बढ़ने वाली एक दलहनी फसल है, जो मृदा में जैविक पदार्थ बढ़ाने, नाइट्रोजन की मात्रा समृद्ध करने, मृदा संरचना सुधारने, नमी धारण क्षमता बढ़ाने तथा रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम करने में सहायक है।

महीने भर चलने वाले 'खेत बचाओ अभियान' का उद्देश्य वैज्ञानिक एवं जलवायु-लचीली कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना, रासायनिक इनपुट पर अत्यधिक निर्भरता कम करना, मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाओं को मजबूत करना तथा सतत मृदा एवं पोषक तत्व प्रबंधन को बढ़ावा देना है।

वैज्ञानिकों ने एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन (INM) को भी बढ़ावा दिया, जिसमें जैविक खाद, कम्पोस्ट, जैव उर्वरक, हरी खाद वाली फसलें तथा मृदा परीक्षण के आधार पर संतुलित उर्वरक उपयोग को शामिल किया जाता है।

कार्यक्रम का समापन किसान–वैज्ञानिक संवाद के साथ हुआ, जिसमें किसानों ने अपने खेतों के अनुभव साझा किए और ऐसी कृषि पद्धतियों को अपनाने के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त की, जो कृषि उत्पादकता, मृदा स्वास्थ्य तथा पर्यावरण संरक्षण को एक साथ बढ़ावा देती हैं।

'खेत बचाओ अभियान': सिफरी ने बिहार के किसानों को सतत मात्स्यिकी एवं वर्मीकम्पोस्टिंग का प्रशिक्षण दिया

सतत कृषि एवं जलवायु-लचीली खेती की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के तहत, भा कृ अनु परि-सिफरी), बैरकपुर ने राष्ट्रीय 'खेत बचाओ अभियान' के अंतर्गत पटना जिले, बिहार के 29 प्रगतिशील किसानों एवं ग्रामीण युवाओं के लिए अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन पर क्षमता संवर्धन कार्यक्रम आयोजित किया।

मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, प्राकृतिक खेती, एकीकृत कृषि प्रणाली तथा संतुलित उर्वरक उपयोग जैसे अभियान के प्रमुख विषयों के अनुरूप इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को पर्यावरण-अनुकूल जलीय कृषि, सतत पोषक तत्व प्रबंधन तथा वर्मीकम्पोस्ट आधारित कृषि पर ज्ञान एवं व्यावहारिक कौशल प्रदान किए गए।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डॉ. प्रदीप डे, निदेशक, सिफरी ने मृदा एवं जलीय पारिस्थितिक तंत्रों पर अनियंत्रित उर्वरक उपयोग के प्रतिकूल प्रभावों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक प्रयोग से मृदा क्षरण एवं पोषक तत्वों का बहाव बढ़ता है, जिससे मछलियों के स्वास्थ्य, जैव विविधता एवं जल गुणवत्ता पर खतरा उत्पन्न होता है।

उन्होंने मृदा परीक्षण आधारित उर्वरक उपयोग, एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन, जैव उर्वरकों तथा जैविक इनपुट को बढ़ावा देने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक वर्मीकम्पोस्टिंग एवं विनियमित अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन जैसे प्रकृति-आधारित समाधान लागत कम करने, संसाधनों के संरक्षण और विकसित भारत 2047 की दिशा में आगे बढ़ने में महत्वपूर्ण हैं। संस्थान के वैज्ञानिकों ने मृदा स्वास्थ्य संरक्षण, संतुलित उर्वरक उपयोग, तालाब की तली की मृदा का आकलन तथा सतत मात्स्यिकी पोषक तत्व प्रबंधन पर तकनीकी सत्र आयोजित किए।

कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण जलीय कृषि में वर्मीकम्पोस्ट एवं वर्मिवॉश के उपयोग का प्रदर्शन था। लाभकारी सूक्ष्मजीवों एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों से समृद्ध ये जैविक इनपुट जल गुणवत्ता में सुधार, तालाब की पारिस्थितिकी को स्थिर करने तथा सतत मछली उत्पादन में सहायक होते हैं।

प्रतिभागियों को संस्थान के नवीन 'अपशिष्ट से संपदा' वर्मीकम्पोस्ट मॉडल से भी परिचित कराया गया, जिसमें जैव-अवक्रमणीय अपशिष्ट को पोषक तत्वों से समृद्ध जैविक खाद में परिवर्तित किया जाता है।

कार्यक्रम का समन्वय डॉ. अपर्णा रॉय, प्रभारी प्रशिक्षण एवं विस्तार इकाई तथा श्री गणेश चंद्र द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन के व्यावहारिक प्रदर्शन के साथ हुआ। इस अवसर पर पोषण सुरक्षा, ग्रामीण आजीविका, पर्यावरणीय स्थिरता तथा जलवायु-लचीली कृषि में अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी की महत्वपूर्ण भूमिका पर विशेष बल दिया गया।

सिफरी द्वारा 'खेत बचाओ अभियान' के तहत किसानों से प्राकृतिक खेती अपनाने और मृदा स्वास्थ्य की रक्षा करने का आग्रह

मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, प्राकृतिक खेती, एकीकृत कृषि तथा संतुलित उर्वरक उपयोग के विषयों को मजबूत करते हुए सिफरी बैरकपुर तथा कृषि विज्ञान केंद्र, हुगली ने 04 जून, 2026 को मेरा गाँव मेरा गौरव (MGMG) पहल के अंतर्गत राष्ट्रव्यापी 'खेत बचाओ अभियान' के रूप में चिनसुरा में किसान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।

कार्यक्रम में 100 से अधिक किसानों, और DAESI कार्यक्रम के 45 विद्यार्थी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। महीने भर चलने वाला यह अभियान मृदा स्वास्थ्य, संतुलित उर्वरक उपयोग, पर्यावरण-अनुकूल खेती तथा सतत आजीविका के लिए कृषि-जलीय पारिस्थितिक तंत्र के महत्वपूर्ण संबंध पर केंद्रित है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय सुबीर नाग, विधायक, चिनसुराह विधानसभा क्षेत्र थे। उन्होंने मृदा स्वास्थ्य के संरक्षण तथा प्राकृतिक एवं सतत कृषि पद्धतियों के माध्यम से पारिस्थितिक संतुलन बहाल करने की आवश्यकता पर बल दिया।

उन्होंने कहा कि रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक एवं अनियंत्रित उपयोग से मृदा उर्वरता, जल गुणवत्ता तथा कृषि की दीर्घकालिक स्थिरता प्रभावित हुई है। उन्होंने प्राकृतिक खेती को कृषि लागत कम करने, मृदा में जैविक पदार्थ बढ़ाने, जैव विविधता सुधारने तथा पर्यावरण संरक्षण एवं सतत खाद्य उत्पादन में सहायक बताया।

इस अवसर पर डॉ. प्रदीप डे, निदेशक, सिफरीने कहा कि "'खेत बचाओ अभियान' एक राष्ट्रीय आंदोलन है, जो मृदा स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा, किसानों की समृद्धि और पर्यावरणीय स्थिरता के बीच निकट संबंध को दिखता है।"

कार्यक्रम में डॉ. ए.के. दास, डॉ. एन. मुड़ी, डॉ. मनोरंजन बिस्वास, डॉ. पूर्णिमा हलदर, प्रो. मानवेंद्र राय तथा डॉ. कैंसियल जॉनसन ने किसानों के साथ संवाद कर सतत कृषि पद्धतियों पर वैज्ञानिक जानकारी साझा की।

कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण ढैंचा (Sesbania aculeata/Sesbania bispinosa) के माध्यम से हरी खाद को बढ़ावा देना था। वैज्ञानिकों ने एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन (INM) अपनाने की भी सलाह दी।

डॉ. ए.के. दास ने प्राकृतिक खेती की तकनीकों, खेत से प्राप्त जैव-इनपुट, फसल अवशेष प्रबंधन, जैविक पोषक तत्व पुनर्चक्रण तथा मृदा स्वास्थ्य सुधार के उपायों पर विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम का समापन किसान–वैज्ञानिक संवाद के साथ हुआ।

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने NFDB-NERC, गुवाहाटी के सहयोग से "सतत विकास के लिए जलवायु-अनुकूल मात्स्यिकी एवं जलीय कृषि" विषय पर वेबिनार

पर्यावरण संरक्षण एवं सतत खाद्य प्रणालियों के संदेश को मजबूत करते हुए सिफरी के क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर प्रयागराज के प्रसिद्ध संगम स्थल पर 'खेत बचाओ अभियान' आयोजित किया। कार्यक्रम में सतत कृषि, स्वस्थ नदी पारिस्थितिक तंत्र तथा अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी संरक्षण के बीच महत्वपूर्ण संबंधों पर प्रकाश डाला गया।

कार्यक्रम का आयोजन डॉ. प्रदीप डे, निदेशक सिफरी के मार्गदर्शन में हुआ। स्वागत संबोधन में डॉ. बी.आर. चव्हाण, केन्द्र प्रमुख, ने वर्मीकम्पोस्टिंग, प्रोबायोटिक्स तथा कृत्रिम रसायनों पर निर्भरता कम करने जैसी प्राकृतिक खेती पद्धतियों के महत्व पर बल दिया।

उन्होंने मृदा स्वास्थ्य सुधार, जलीय पारिस्थितिक तंत्र संरक्षण तथा कृषि की स्थिरता में इन उपायों की भूमिका बताई। उन्होंने नदी पारिस्थितिक संतुलन एवं मछली जैव विविधता बनाए रखने में रिवर रैंचिंग के महत्व को भी रेखांकित किया।

कार्यक्रम में प्रो. (डॉ.) नीलम यादव, समन्वयक, सेंटर फॉर फूड टेक्नोलॉजी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, मुख्य अतिथि थीं। प्रो. (डॉ.) अश्विनी कुमार, वनस्पति विज्ञान विभाग तथा प्रो. (डॉ.) एस.के. चौहान, पर्यावरण विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

पर्यावरण एवं सामुदायिक संगठनों के प्रतिनिधि के तौर पर श्री सरजीत नायक, गंगा टास्क फोर्स तथा श्री राजेश शर्मा, गंगा विचार मंच, प्रयागराज उपस्थित थे । कार्यक्रम में छह महिलाओं सहित कुल 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रो. नीलम यादव ने नदियों में रासायनिक बहाव को कम करने तथा मृदा उर्वरता एवं कृषि स्थिरता सुधारने के लिए प्राकृतिक खेती अपनाने की सलाह दी।प्रो. अश्विनी कुमार ने जैविक पोषक तत्व पुनर्चक्रण को मृदा उत्पादकता बढ़ाने एवं जल निकायों के प्रदूषण को रोकने का प्रभावी उपाय बताया।

सिफरी के वैज्ञानिकों ने जलीय जैव विविधता की रक्षा तथा उपभोक्ताओं के लिए सुरक्षित एवं पौष्टिक मछली सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार जलीय कृषि पद्धतियों, विशेष रूप से अनियंत्रित एंटीबायोटिक उपयोग से बचने पर बल दिया।

कार्यक्रम का समापन किसानों, मछुआरों, वैज्ञानिकों एवं सामुदायिक हितधारकों द्वारा नदी पारिस्थितिक तंत्रों के संरक्षण, प्राकृतिक खेती तथा सतत खाद्य उत्पादन प्रणालियों को बढ़ावा देने के लिए सामूहिक संकल्प के साथ हुआ।

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के अंतर्गत सिफरीने निम्न गंगा में लगभग 35,000 देशज कार्प मत्स्य अंगुलिकाओं का रिवर रैंचिंग किया

सिफरी, बैरकपुर ने राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (NMCG) चरण-III परियोजना के अंतर्गत 09 जून, 2026 को दासपाड़ा घाट, बैरकपुर स्थित निम्न गंगा में नदी रैंचिंग कार्यक्रम आयोजित किया।

कार्यक्रम का उद्देश्य देशज मछली जैव विविधता का संरक्षण, भारतीय प्रमुख कार्प मछलियों का पुनरुत्थान, गंगा पारिस्थितिक तंत्र की स्थिरता को मजबूत करना तथा नदी-आधारित सतत मात्स्यिकी को बढ़ावा देना था।

रैंचिंग गतिविधि के अंतर्गत लगभग 35,000 मत्स्य अंगुलिकाओं, जिनका कुल वजन लगभग 175 किलोग्राम था, को निचली गंगा में छोड़ा गया। इनमें रोहू, कतला, मृगल और कलबासु शामिल थे।

यह कार्यक्रम डॉ. एस.के. मन्ना, परियोजना समन्वयक, NMCG चरण-III के नेतृत्व में आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ. देविका पिल्लई, सहायक महानिदेशक (अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली तथा डॉ. प्रदीप डे, संस्थान के निदेशक, उपस्थित थे।

डॉ. देविका पिल्लई ने जलीय जैव विविधता के संरक्षण, नदी मात्स्यिकी को बढ़ाने तथा नदी-आश्रित मछुआरों की आजीविका के लिए ऐसे वैज्ञानिक स्टॉक संवर्धन कार्यक्रमों के महत्व पर प्रकाश डाला।

डॉ. प्रदीप डे ने कहा कि नदी रैंचिंग नदीय पारिस्थितिक तंत्र में मछली भंडार की पुनःपूर्ति तथा पारिस्थितिक संतुलन बहाल करने का एक प्रमाणित उपाय है।

'खेत बचाओ अभियान' के अंतर्गत झाड़ग्राम के किसानों के बीच मृदा स्वास्थ्य पुनर्स्थापन अभियान

सतत कृषि के राष्ट्रीय मिशन को मजबूत करते हुए सिफरी) ने 10 जून, 2026 को झाड़ग्राम जिले में "मेरा गाँव मेरा गौरव" (MGMG) पहल के अंतर्गत दो बड़े किसान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए। कार्यक्रमों का केंद्र मृदा स्वास्थ्य पुनर्स्थापन, संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन, प्राकृतिक खेती, जल संरक्षण तथा जलवायु-लचीली कृषि पद्धतियां थीं।

धर्मपुर ग्राम पंचायत के हाधाड़ी गांव तथा बेलाटिकरी ग्राम पंचायत में आयोजित इन कार्यक्रमों में बड़ी संख्या में जनजातीय किसानों सहित कुल 124 किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रमों का आयोजन ग्रामीण विकास संगठन (PRADAN) के सहयोग से किया गया।

डॉ. ए.के. दास, प्रधान वैज्ञानिक, सिफरी ने उर्वरकों के विवेकपूर्ण उपयोग तथा पर्यावरण-अनुकूल कृषि पद्धतियों के माध्यम से मृदा क्षरण को रोकने की तत्काल आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने रासायनिक उर्वरकों के अनियंत्रित प्रयोग से मृदा उर्वरता, जल गुणवत्ता तथा दीर्घकालिक कृषि उत्पादकता पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों के प्रति किसानों को सचेत किया।

साथ ही, किसानों को संतुलित पोषक तत्व उपयोग, मृदा जैविक कार्बन में वृद्धि तथा प्राकृतिक खेती के लाभों के बारे में जानकारी दी गई।

डॉ. प्रदीप डे ने कहा कि स्वस्थ मृदा खाद्य सुरक्षा, जलवायु लचीलापन तथा सतत ग्रामीण आजीविका की आधारशिला है। आगे उन्होंने बताया कि 'खेत बचाओ अभियान' केवल जागरूकता अभियान नहीं बल्कि किसानों को विज्ञान-आधारित, संसाधन-कुशल तथा पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार कृषि पद्धति अपनाने के लिए एक प्रेरक आंदोलन है।

नमामि गंगे के अंतर्गत मछली जैव विविधता पुनर्स्थापन: श्रीनगर के अलकनंदा बांध क्षेत्र में 7,000 महाशीर मत्स्य अंगुलिका का रैंचिंग

लुप्तप्राय मछली प्रजाति महाशीर के संरक्षण एवं पुनर्स्थापन के लिए नमामि गंगे परियोजना के अंतर्गत श्रीनगर बांध क्षेत्र के समीप धारी देवी मंदिर के पास अलकनंदा नदी में 7,000 महाशीर मत्स्य अंगुलिकाएं छोड़ी गईं।

यह रैंचिंग-सह-जागरूकता कार्यक्रम सिफरी ने हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्राणी विज्ञान विभाग तथा टिहरी गढ़वाल के मात्स्यिकी विभाग के सहयोग से आयोजित किया।

महाशीर हिमालयी क्षेत्र की एक विशिष्ट देशज मछली है और नदी पारिस्थितिक तंत्र को बनाए रखने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। विभिन्न कारणों से इसकी संख्या में कमी आई है और यह संकटग्रस्त स्थिति में पहुंच गई है।

कार्यक्रम में प्रो. मंजू प्रकाश गुसाईं, प्रो. ओ.पी. गुसाईं, प्रो. दीपक सिंह तथा टिहरी गढ़वाल मात्स्यिकी विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे। डॉ. दीपक सिंह ने इस पहल को नदी जैव विविधता के संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया। उन्होंने कहा कि महाशीर को उत्तराखंड की राज्य मछली घोषित किया गया है, लेकिन क्षेत्र की नदियों में इसकी संख्या लगातार घट रही है।

अलकनंदा हाइड्रो पावर कंपनी के सहयोग से HNB गढ़वाल विश्वविद्यालय के चौरास परिसर के प्राणी विज्ञान विभाग में महाशीर के लिए एक मत्स्य हैचरी स्थापित की गई है। नदी में छोड़ी गई 7,000 अंगुलिकाएं इसी हैचरी तथा टिहरी गढ़वाल मात्स्यिकी विभाग की हैचरी में तैयार की गई थीं।

नमामि गंगे परियोजना के वैज्ञानिक डॉ. उपेंद्र सिंह, डॉ. जितेंद्र सिंह राणा तथा डॉ. रणजीत सिंह ने महाशीर के महत्व एवं संरक्षण पर जानकारी दी। उन्होंने बताया कि नमामि गंगे कार्यक्रम के अंतर्गत गंगा नदी के विभिन्न स्थानों पर अब तक लगभग 40,000 महाशीर किशोर मछलियां छोड़ी जा चुकी हैं।

कार्यक्रम में शोधार्थियों तथा स्थानीय मत्स्य किसानों ने भी भाग लिया और नदी को स्वच्छ, स्वस्थ एवं जीवंत बनाए रखने का सामूहिक संकल्प लिया।

बिहार के मछुआरों को उन्नत अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन का प्रशिक्षण

सतत मात्स्यिकी एवं आजीविका के अवसरों को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के तहत सिफरी, बैरकपुर ने पटना जिले, बिहार के मत्स्य किसानों के लिए "अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन" पर सात दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया। बिहार सरकार के मात्स्यिकी निदेशालय द्वारा प्रायोजित इस कार्यक्रम में 30 मत्स्य किसान तथा एक मात्स्यिकी विकास अधिकारी ने भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डॉ. प्रदीप डे, निदेशक, सिफरीने सतत आजीविका, मछली उत्पादकता तथा भारत की नीली अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में विज्ञान-आधारित अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया।

उन्होंने प्रत्येक प्रशिक्षु को "मास्टर ट्रेनर" बनने तथा अर्जित ज्ञान को अन्य पांच से सात मछुआरों तक पहुंचाने का आग्रह किया।इस प्रशिक्षण के तहत 04 जून को 'खेत बचाओ अभियान' पर विशेष सत्र आयोजित किया गया जिसमें कृषि भूमि एवं जलीय पारिस्थितिक तंत्रों पर अनियंत्रित उर्वरक उपयोग के प्रभावों पर चर्चा हुई।

प्रशिक्षण में अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी संसाधन, तालाब प्रबंधन, प्रेरित प्रजनन, मिश्रित मत्स्य पालन, सजावटी मात्स्यिकी, एनक्लोजर कल्चर, मत्स्य स्वास्थ्य प्रबंधन तथा प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) सहित विभिन्न विषय शामिल थे।

प्रतिभागियों को पुनर्चक्रीय जलीय कृषि प्रणाली (RAS), सजावटी मछली हैचरी तथा मत्स्य आहार मिल जैसी संस्थान की आधुनिक सुविधाओं का व्यावहारिक अनुभव दिया गया।

अध्ययन भ्रमण के अंतर्गत भा. कृ. अनु. परि.-CIFA, राहड़ा केंद्र, पूर्वी कोलकाता आर्द्रभूमि में अपशिष्ट जल आधारित जलीय कृषि प्रणालियों, सजावटी मछली बाजार तथा अन्य मात्स्यिकी प्रतिष्ठानों का भ्रमण कराया गया।

समापन सत्र में डॉ. प्रदीप डे ने प्रशिक्षण प्रमाणपत्र वितरित किए और प्रतिभागियों को अर्जित ज्ञान को अपने क्षेत्रों में लागू करने तथा अन्य मछुआरों तक पहुंचाने के लिए प्रोत्साहित किया।

नदिया में 'खेत बचाओ अभियान' के माध्यम से सतत कृषि एवं आर्द्रभूमि पारिस्थितिक तंत्रों के संरक्षण को बढ़ावा दिया

सतत कृषि एवं जलीय पारिस्थितिक तंत्रों के संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए भा. कृ. अनु. परि.-CIFRI, बैरकपुर ने 16 जून, 2026 को नदिया जिले के हरिंगहाटा ब्लॉक स्थित खालसी बील में 'खेत बचाओ अभियान' आयोजित किया।

कार्यक्रम में 50 से अधिक किसानों ने भाग लिया। किसानों को मृदा स्वास्थ्य, वैज्ञानिक पोषक तत्व प्रबंधन, प्राकृतिक खेती तथा आर्द्रभूमि संरक्षण के बारे में जागरूक किया गया। यह देखा गया कि कई किसानों के पास मृदा स्वास्थ्य कार्ड नहीं थे और वे जूट एवं परवल जैसी फसलों में विशेष रूप से यूरिया का वैज्ञानिक सुझावों के बिना उपयोग कर रहे थे।

वैज्ञानिकों ने बताया कि अनियंत्रित उर्वरक उपयोग मृदा गुणवत्ता को प्रभावित करने के साथ-साथ आर्द्रभूमि में पोषक तत्वों के बहाव को बढ़ाता है, जिससे यूट्रोफिकेशन एवं हानिकारक शैवाल प्रस्फुटन होता है। विशेष रूप से Microcystis नामक विषैले नीले-हरे शैवाल के प्रसार के प्रति किसानों को सचेत किया गया।

किसानों को स्थानीय कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से मृदा परीक्षण कराने तथा वैज्ञानिक सिफारिशों के आधार पर संतुलित उर्वरक उपयोग करने के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में ढैंचा (Sesbania spp.) को हरी खाद के रूप में अपनाने तथा कम्पोस्ट, जैव उर्वरक एवं जैविक इनपुट के उपयोग को बढ़ावा दिया गया।

डॉ. रंजन कुमार मन्ना, प्रभागाध्यक्ष, सिफरी ने कहा कि स्वस्थ मृदा सतत कृषि एवं दीर्घकालिक खाद्य सुरक्षा की आधारशिला है।

डॉ. प्रदीप डे ने 'खेत बचाओ अभियान' को मृदा एवं जल निकायों के संरक्षण के प्रति सामूहिक प्रतिबद्धता बताया।

कार्यक्रम में PM-Kisan, किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) तथा अन्य सरकारी योजनाओं के बारे में भी जानकारी दी गई।

प्रयोगशाला गुणवत्ता एवं प्रत्यायन को मजबूत करने के लिए QCI-NBQP के सहयोग से 'गुणवत्ता यात्रा' जागरूकता कार्यक्रम

वैज्ञानिक अनुसंधान एवं प्रयोगशाला गुणवत्ता आश्वासन में उत्कृष्टता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत करते हुए सिफरी, बैरकपुर ने गुणवत्ता परिषद भारत (QCI) के घटक निकाय राष्ट्रीय गुणवत्ता प्रोत्साहन बोर्ड (NBQP) के सहयोग से 'गुणवत्ता यात्रा' पहल के अंतर्गत 23 जून, 2026 को जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रयोगशाला कार्यप्रणालियों में गुणवत्ता की संस्कृति को बढ़ावा देना, तकनीकी दक्षता मजबूत करना तथा राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला प्रत्यायन ढांचे के बारे में जागरूकता पैदा करना था।

उद्घाटन संबोधन में डॉ. प्रदीप डे, निदेशक, सिफरी के निदेशक ने वैश्विक गुणवत्ता मानकों के अनुरूप प्रयोगशाला विश्लेषण में उच्चतम मानकों को बनाए रखने के महत्व पर बल दिया। कार्यक्रम में श्री के. सिरी बाबू, सहायक निदेशक, NABL तथा NBQP के अन्य सदस्यों ने संसाधन व्यक्तियों के रूप में भाग लिया। तकनीकी सत्रों में ISO/IEC 17025:2017 मानक तथा प्रयोगशाला गतिविधियों के लिए NABL प्रत्यायन प्राप्त करने की ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी गई।

कार्यक्रम में संस्थान के प्रभागाध्यक्षों, प्रधान वैज्ञानिकों, वरिष्ठ वैज्ञानिकों, वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों एवं तकनीशियनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का समन्वय डॉ. एस.के. नाग, गुणवत्ता प्रबंधक तथा डॉ. डी.जे. सरकार, तकनीकी प्रबंधक ने किया।

किसान-केंद्रित विकास को मजबूत करने के लिए सिफरी में पीएम-किसान उत्सव दिवस एवं 'खेत बचाओ अभियान' आयोजित

इस कार्यक्रम में भारत के माननीय प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (PM-KISAN) योजना की 23वीं किस्त जारी किए जाने का सीधा प्रसारण किया गया। कार्यक्रम में किसानों, मछुआरों, हितधारकों एवं जनप्रतिनिधियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, माननीय श्री शांतनु ठाकुर, केंद्रीय राज्य मंत्री, पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय उपस्थित थे। उन्होंने किसानों से संवाद किया तथा विज्ञान आधारित कृषि, सतत मात्स्यिकी एवं तकनीक आधारित ग्रामीण विकास की परिवर्तनकारी भूमिका पर प्रकाश डाला।

उन्होंने बताया कि PM-KISAN किसान कल्याण की एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसके माध्यम से 9.44 करोड़ से अधिक किसानों को प्रत्यक्ष वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है।

अपने स्वागत संबोधन में डॉ. प्रदीप डे, निदेशक, सिफरी ने PM-KISAN, PMMSY, PMFBY, RWBCIS, डिजिटल कृषि मिशन (AgriStack), राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन तथा PM Dhan-Dhaanya Krishi Yojana जैसी प्रमुख योजनाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला।

सीधा प्रसारण शुरू होने से पहले 'खेत बचाओ अभियान' के अंतर्गत "स्वस्थ मृदा, स्वस्थ फसल, समृद्ध किसान" विषय पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। तथाकिसानों को मृदा स्वास्थ्य, संतुलित एवं विवेकपूर्ण उर्वरक उपयोग, मृदा परीक्षण आधारित पोषक तत्व प्रबंधन तथा एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन (INM) एवं प्राकृतिक खेती के बारे में जानकारी दी गई।

कार्यक्रम में नैहाटी, बसुदेवपुर, बेराबेरिया एवं आमडांगा, उत्तर 24 परगना, पश्चिम बंगाल तथा बेगूसराय, बिहार से कुल 286 किसानों, मछुआरों एवं अन्य हितधारकों ने भाग लिया।

कार्यक्रम ने नीति निर्माताओं, वैज्ञानिक संस्थानों एवं कृषक समुदाय के बीच संपर्क को मजबूत करने तथा शोध एवं नवाचार को जमीनी स्तर तक पहुंचाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

देशज कैटफिश का पुनरुद्धार, आर्द्रभूमियों में नई जान: चामता फिश हार्वेस्ट मेला में सिफरी की सफलता का प्रदर्शन

अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी संरक्षण एवं ग्रामीण आजीविका की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में सिफरी, बैरकपुर ने WorldFish के सहयोगी परियोजना के अंतर्गत विज्ञान आधारित मात्स्यिकी संवर्धन कार्यक्रम के माध्यम से चामटा आर्द्रभूमि में उच्च मूल्य वाली देशज कैटफिश आबादी के पुनर्स्थापन का सफल प्रदर्शन किया।

यह उपलब्धि चामता आर्द्रभूमि में आयोजित फिश हार्वेस्ट मेला एवं वैज्ञानिक–मछुआरा संवाद कार्यक्रम में प्रदर्शित की गई।

छह माह के पेन में मक्षली पालन कार्यक्रम के बाद Mystus cavasius की 387 किलोग्राम मछली का उत्पादन प्राप्त हुआ। प्रारंभ में मछलियों का औसत वजन 2.28 ग्राम था, जो बढ़कर औसतन 33.6 ग्राम हो गया।

डॉ. प्रदीप डे, संस्थान के निदेशक, ने कहा कि देशज मात्स्यिकी का विज्ञान-आधारित पुनर्स्थापन अब केवल संरक्षण पहल नहीं, बल्कि एक रणनीतिक विकास आवश्यकता है।इससे आर्द्रभूमियों के पुनर्जीवन, मछुआरों की आय में वृद्धि, खाद्य एवं पोषण सुरक्षा तथा देश की समृद्ध जलीय जैव विविधता का संरक्षण एक साथ संभव है।

डॉ. आर.के. मन्ना, प्रमुख, जलाशय एवं आद्रक्षेत्र मात्स्यिकी प्रभाग ने सतत मात्स्यिकी प्रबंधन पद्धतियों को तेजी से अपनाने के लिए निरंतर ज्ञान साझा करने एवं संस्थागत साझेदारी की आवश्यकता पर बल दिया।

चामता फिशरमेन कोऑपरेटिव सोसाइटी के प्रबंधक श्री प्रणय बाला ने कहा कि वैज्ञानिक हस्तक्षेप से न केवल मछुआरों की आय में सुधार हुआ है बल्कि आर्द्रभूमि में मूल्यवान देशज मछलियों की आबादी के पुनर्जीवन में भी सहायता मिली है।

इस पहल के अंतर्गत Mystus cavasius और Mystus tengara जैसी देशज कैटफिश प्रजातियों के संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया गया।

सिफरी ने HDPE पोल एवं शिकारी-रोधी जाल से वैज्ञानिक पेन निर्माण, जल एवं मृदा गुणवत्ता की नियमित निगरानी, मत्स्य स्वास्थ्य प्रबंधन तथा संतुलित आहार उपलब्ध कराने सहित तकनीकी सहायता प्रदान की।

चामटा मॉडल समुदाय आधारित, विज्ञान समर्थित अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण उदाहरण बनकर उभरा है।

कृषि को बढ़ावा: ‘खेत बचाओ अभियान’ पर जागरूकता कार्यक्रम

सिफरी के निदेशक के मार्गदर्शन में हरिंगहाटा ब्लॉक, नदिया जिले के माथपाड़ा प्राथमिक विद्यालय में ‘खेत बचाओ अभियान’ पर किसान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। जिसमें उत्तरब्रह्मपुर, माथपाड़ा तथा खालसी गांवों से 71 किसानों, जिनमें 23 महिलाएं और 48 पुरुष शामिल थे, ने भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. ए.के. बेरा, कार्यवाहक प्रभागाध्यक्ष एवं प्रधान वैज्ञानिक ने किया। उन्होंने मृदा परीक्षण, मृदा स्वास्थ्य कार्ड तथा रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग के दुष्प्रभावों पर प्रकाश डाला।

डॉ. अरुण डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कीटनाशकों के दुष्प्रभाव, उर्वरक निर्भरता कम करने के लिए फसल योजना तथा सतत विकल्पों पर जानकारी दी। उन्होंने प्रमुख कृषि योजनाओं के बारे में भी बताया।

डॉ. एम. शाया देवी, वैज्ञानिक ने जैविक उर्वरकों एवं हरी खाद के लाभों पर प्रकाश डालते हुए मृदा स्वास्थ्य की रक्षा तथा दीर्घकालिक स्थिरता में उनकी भूमिका समझाई।

कार्यक्रम का समन्वय डॉ. ए.के. बेरा, डॉ. अरुण डे एवं डॉ. एम. शाया देवी ने किया तथा माथपाड़ा के श्री गोपाल ने क्षेत्रीय सहयोग प्रदान किया।

खेत बचाओ अभियान' के अंतर्गत गुमला में 'किसानों को सतत कृषि के प्रति जागरूक करना

सतत कृषि एवं प्राकृतिक संसाधन संरक्षण के प्रति राष्ट्रीय प्रतिबद्धता को मजबूत करते हुए भा. सिफरी, बैरकपुर ने 26 जून, 2026 को झारखंड के गुमला जिले के घाघरा ब्लॉक स्थित मसरिया जलाशय स्थल पर 'खेत बचाओ अभियान' के अंतर्गत किसान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में कुल 57 किसानों, जिनमें 47 पुरुष एवं 10 महिलाएं शामिल थीं, ने भाग लिया।

कार्यक्रम में श्री संतोष उरांव, ग्राम पंचायत सदस्य उपस्थित रहे। डॉ. ए.के. दास, प्रधान वैज्ञानिक, सिफरी ने तकनीकी विचार-विमर्श का नेतृत्व किया।

वैज्ञानिकों ने मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, संतुलित उर्वरक उपयोग, प्राकृतिक खेती, जल संरक्षण तथा प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग पर बल दिया।

विशेषज्ञों ने कहा कि मृदा एवं जल संसाधनों का सतत प्रबंधन कृषि उत्पादकता बढ़ाने, पर्यावरणीय क्षरण कम करने तथा ग्रामीण समुदायों की दीर्घकालिक आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है।

डॉ. प्रदीप डे ने अनियंत्रित उर्वरक उपयोग से मृदा क्षरण, पोषक तत्वों की हानि एवं जलीय स्वास्थ्य में गिरावट के पारिस्थितिकीय प्रभावों पर प्रकाश डाला।

उन्होंने मृदा परीक्षण आधारित पोषक तत्व प्रबंधन, संतुलित उर्वरक उपयोग, जैव उर्वरक एवं जैविक संशोधनों पर बल दिया। कार्यक्रम का समापन किसान–वैज्ञानिक संवाद के साथ हुआ।

'खेत बचाओ अभियान': नदियों में मृदा स्वास्थ्य एवं आर्द्रभूमि पारिस्थितिक तंत्र संरक्षण के लिए अभियान

स्वस्थ मृदा, सतत कृषि एवं समृद्ध जलीय पारिस्थितिक तंत्रों के बीच महत्वपूर्ण संबंध को मजबूत करते हुए भा. कृ. अनु. परि.-CIFRI, बैरकपुर ने 24 जून, 2026 को नदिया जिले के हरिंगहाटा ब्लॉक स्थित खालसी बील में 'खेत बचाओ अभियान' आयोजित किया।

कार्यक्रम में उत्तरब्रह्मपुर, माथपाड़ा एवं खोल्सों गांवों के 71 से अधिक किसानों, जिनमें 23 महिलाएं शामिल थीं, ने भाग लिया।

जागरूकता अभियान में अवैज्ञानिक उर्वरक उपयोग तथा इसके मृदा उर्वरता, फसल उत्पादकता एवं आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी पर पड़ने वाले प्रभावों पर चर्चा की गई।

वैज्ञानिकों ने बताया कि अत्यधिक एवं असंतुलित उर्वरक उपयोग मृदा स्वास्थ्य को प्रभावित करने के साथ-साथ आर्द्रभूमि में पोषक तत्वों के बहाव को बढ़ाता है, जिससे यूट्रोफिकेशन एवं हानिकारक शैवाल प्रस्फुटन होता है।

विशेष रूप से Microcystis, एक विषैला नीला-हरा शैवाल, जलीय जैव विविधता एवं मछली उत्पादन के लिए गंभीर खतरा है।

किसानों को निकटवर्ती कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से नियमित मृदा परीक्षण कराने तथा मृदा स्वास्थ्य के आधार पर संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन अपनाने के लिए प्रेरित किया गया।

कार्यक्रम में हरी खाद, कम्पोस्ट, जैव उर्वरक तथा जैविक इनपुट के उपयोग को बढ़ावा दिया गया। डॉ. ए.के. बेरा ने मृदा परीक्षण, मृदा स्वास्थ्य कार्ड, संतुलित पोषक तत्व उपयोग, प्राकृतिक खेती एवं वैज्ञानिक जल प्रबंधन पर बल दिया। डॉ. अरुण डे ने अनियंत्रित कीटनाशक उपयोग के पर्यावरणीय जोखिमों पर प्रकाश डाला। डॉ. एम. शाया देवी ने जैविक उर्वरकों एवं हरी खाद की भूमिका समझाई।

बंगाल के प्रमुख मत्स्य क्षेत्र मोयना में 'खेत बचाओ अभियान' के अंतर्गत सतत कृषि को बढ़ावा दिया

सतत कृषि के राष्ट्रीय मिशन को आगे बढ़ाते हुए सिफरी, बैरकपुर ने मेरा गाँव मेरा गौरव (MGMG) पहल के माध्यम से पूर्व मेदिनीपुर जिले के मोयना में 'खेत बचाओ अभियान' के अंतर्गत बड़े पैमाने पर किसान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में 109 किसानों, अधिकारियों एवं हितधारकों, जिनमें बड़ी संख्या में मत्स्य किसान शामिल थे, ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

पश्चिम बंगाल के प्रमुख मीठे पानी की मछली उत्पादक क्षेत्रों में से एक मोयना ऐसा विशिष्ट कृषि-पारिस्थितिक क्षेत्र है जहां कृषि एवं जलीय कृषि एक साथ संचालित होती हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं।

कार्यक्रम में फसल उत्पादकता बढ़ाने के साथ-साथ तालाबों, आर्द्रभूमि, नहरों एवं अन्य जलीय संसाधनों को कृषि-रसायनों के प्रदूषण से बचाने वाली सतत कृषि पद्धतियों की आवश्यकता पर बल दिया गया।

डॉ. प्रदीप डे, निदेशक, भा. कृ. अनु. परि.-CIFRI ने कहा कि स्वस्थ मृदा खाद्य सुरक्षा, जलवायु लचीलापन, पर्यावरणीय स्थिरता एवं ग्रामीण समृद्धि के लिए एक रणनीतिक राष्ट्रीय संपदा है।

डॉ. असित कुमार बेरा, प्रमुख, जलीय पर्यावरण जैव-प्रौद्योगिकी प्रभाग ने अनियंत्रित उर्वरक उपयोग से मृदा क्षरण एवं पोषक तत्व असंतुलन के जोखिमों पर प्रकाश डाला।

उन्होंने बताया कि जल निकायों में पोषक तत्वों का बहाव यूट्रोफिकेशन, शैवाल प्रस्फुटन, ऑक्सीजन की कमी तथा मछली जैव विविधता के नुकसान का कारण बन सकता है।

कार्यक्रम में ढैंचा (Sesbania aculeata/Sesbania bispinosa) को हरी खाद के रूप में अपनाने के लिए किसानों को प्रेरित किया गया।

किसानों ने वैज्ञानिकों के साथ संवाद किया तथा उत्पादकता बढ़ाने एवं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए सतत कृषि पद्धतियों को अपनाने में रुचि दिखाई।

कार्यक्रम के संदेशों को व्यापक कृषक समुदाय तक पहुंचाने के लिए मोयना पल्ली मंगल FM सामुदायिक रेडियो के साथ साझेदारी भी की गई।

वाइब्रेंट गुजरात क्षेत्रीय सम्मेलन में भा. कृ. अनु. परि.-CIFRI ने नीली क्रांति की अभिनव प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया

सिफरी के वडोदरा अनुसंधान केंद्र ने 29–30 जून, 2026 को GSFC विश्वविद्यालय, वडोदरा में आयोजित वाइब्रेंट गुजरात क्षेत्रीय सम्मेलन (मध्य गुजरात) में सक्रिय भागीदारी की।

सम्मेलन में नीति निर्माता, वैज्ञानिक, शिक्षाविद, उद्यमी एवं अन्य प्रमुख हितधारक शामिल हुए। इसमें गुजरात की अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी एवं संबद्ध क्षेत्रों में सतत विकास, नवाचार एवं निवेश को बढ़ावा देने की रणनीतियों पर विचार-विमर्श किया गया।

कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण "गुजरात को अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी का पावरहाउस बनाना" विषय पर आयोजित संगोष्ठी थी। इसकी अध्यक्षता माननीय केंद्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन एवं डेयरी तथा पंचायती राज मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह ने की।

तकनीकी सत्र में डॉ. एस.पी. कांबले, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी, सिफरी वडोदरा अनुसंधान केंद्र ने "Building Blue Infrastructure Backbone: Unlocking Growth in Gujarat's Inland Fisheries" विषय पर आमंत्रित व्याख्यान दिया।

उन्होंने गुजरात में अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी के सतत विकास को गति देने के लिए मात्स्यिकी अवसंरचना को मजबूत करने, वैज्ञानिक प्रबंधन पद्धतियों को अपनाने तथा तकनीक आधारित हस्तक्षेपों को बढ़ावा देने पर प्रकाश डाला।

मात्स्यिकी मंडप में डॉ. कांबले ने श्री जयेश के. सोलंकी, तकनीकी अधिकारी के साथ सिफरी की व्यावसायिक रूप से प्रमाणित प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन

किया।मंडप में गणमान्य व्यक्तियों, सरकारी अधिकारियों, उद्यमियों, मत्स्य किसानों, विद्यार्थियों तथा आम जनता ने रुचि दिखाई और वैज्ञानिकों से संवाद किया।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप डे, ने कहा कि गुजरात में वैज्ञानिक नवाचार, सतत संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक आधारित हस्तक्षेपों के माध्यम से अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी में अग्रणी बनने की अपार क्षमता है। सिफरी आवश्यकता-आधारित तकनीकों के विकास एवं प्रसार, क्षमता निर्माण तथा सहयोगात्मक प्रयासों के माध्यम से गुजरात के मात्स्यिकी क्षेत्र को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है।

सम्मेलन के समापन सत्र में गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा माननीय केंद्रीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह उपस्थित रहे।

फरक्का में गंगा नदी में हिल्सा रैंचिंग कार्यक्रम आयोजन

सिफरी ने राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (NMCG) के अंतर्गत 28 जून, 2026 को फरक्का बैराज के ऊपर गंगा नदी में हिल्सा रैंचिंग कार्यक्रम आयोजित किया।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य गंगा नदी में, विशेषकर प्रयागराज से फरक्का के बीच, हिल्सा मात्स्यिकी का पुनर्स्थापन करना था।

हिल्सा भारतीय शैड मछली है और इसका सांस्कृतिक, पोषणीय एवं व्यावसायिक महत्व अत्यधिक है। इसके आकार के अनुसार इसकी कीमत लगभग ₹1,000 से ₹3,000 प्रति किलोग्राम तक होती है।

फरक्का बैराज के निर्माण के बाद गंगा के मध्य प्रवाह क्षेत्र में इस महत्वपूर्ण मछली का उत्पादन काफी कम हो गया है। इस संदर्भ में हिल्सा की बढ़ी हुई वयस्क अवस्थाओं का रैंचिंग कार्यक्रम हिल्सा आबादी तथा

मछुआरों की आजीविका में सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक हस्तक्षेप है। इस अवसर पर गंगा नदी में बड़े गोलाकार पिंजरों में पाली गई 110 युवा वयस्क हिल्सा मछलियों को फरक्का बैराज के ऊपर नदी में छोड़ा गया।

कार्यक्रम में डॉ. ए.के. साहू, प्रधान वैज्ञानिक, सिफरी ने वर्ष 2020 से NMCG के अंतर्गत चल रहे हिल्सा रैंचिंग कार्यक्रम के उद्देश्यों, प्रमुख उपलब्धियों एवं संरक्षण गतिविधियों की जानकारी दी।

कार्यक्रम में फरक्का बैराज, NTPC, CISF तथा मात्स्यिकी विभाग के विभिन्न अधिकारी उपस्थित रहे।

गृह मंत्रालय, पोत परिवहन मंत्रालय एवं विद्युत मंत्रालय के प्रतिनिधियों ने हिल्सा संरक्षण एवं रैंचिंग गतिविधियों के सफल कार्यान्वयन के लिए हरसंभव सहयोग का आश्वासन दिया।

NTPC ने अपने CSR कार्यक्रमों के माध्यम से इस पहल को और मजबूत करने की इच्छा व्यक्त की।

कार्यक्रम का समन्वय डॉ. ए.के. साहू ने किया तथा डॉ. एस.के. मन्ना, प्रधान वैज्ञानिक एवं विभागाध्यक्ष के पर्यवेक्षण एवं डॉ. प्रदीप डे, निदेशक, सिफरी के मार्गदर्शन में कार्यक्रम संपन्न हुआ।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: प्रदीप डे, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.परि.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,

(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.org.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: प्रकाशितनहीं की जा सकती है